AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF: 1.024
Vol (2), Issue (1), Feb-April 2025 ISSN: 3048-7951

किशोरावस्था में फैशन के अनुरूप बने वस्त्रो का अध्ययन

अर्चना सिंह(शोधार्थी) और डॉ उमा सोनी(निर्देशिका)

Review: 05/04/2025 Acceptance: 25/05/2025 Publication:12/06/2025

संक्षेप सार: फैशन के द्वारा बालक व **बालिकाओं** का अपने तरफ ध्यान आकर्षित करना ज्यादा मुश्किल नहीं है क्योंकि हमारे किशोर व किशोरिया फैशन के पीछे लगे हुए हैं।

परिचय; फैशन डिजाइन 19वीं शताब्दी **में** चार्ल्स फ्रेडरिक वर्थ ने शुरू किया चार्ल्स अपने बनाए गए कपड़ों पर अपने नाम का लेवल लगाया करते थे और यह पहले ऐसे व्यक्ति थे जो अपने द्वारा बनाए हुए कपड़ों पर अपने नाम का लेबर लगाने वाले पहले डिजाइनर थे ।

फैशन की शुरुआत भारत में: हमारा **राष्ट्र** उतना ही रंगीन है जितना की फैशन यह हमारे देश की समृद्ध, सांस्कृतिक, विरासत और हजारों वर्षों के सौंदर्य **शास्त्र** को दर्शाता है भारतीय फैशन का दृश्य कई **प्रकार** की शैलियों को अपने आप में समेटे हुए हैं जो पूर्व और पश्चिम के संलयन को बनाने के लिए पारंपरिक तरीको और आधुनिक समय के विचारों का बहुत ही बेहतरीन मिश्रण है जो हमारी **मिट्टी** के खुशबू में महसूस किया जा सकता है। फैशन की शुरुआत भारत में सिंधु घाटी की सभ्यता से ही पता चल जाता है खुदाई से मिली मूर्तियों और मुंहरो पर उसे समय के अति सूक्ष्म बाद या नग्नता ने भी फैशन के ज्ञान को **परिभाषित** करते दिखा, कपड़े का प्लेन टुकड़ा जो **बिना** सिलाई के होते थे वह सब कुछ जो हड़प्पा और मोहन जोदड़ो के लोग अपने तन पर डाला करते थे।

युवाओं का फैशन: युवा पीढ़ी अपने आप को सुंदर और मॉडल दिखाने के लिए किसी भी प्रकार का नकल करने और उनका अनुसरण करने की क्षमता को अपने अंदर रखते हैं और इसके साथ ही फैशनेबल दिखने वाली हर उसे चीजों से जुड़ने और उनका उपयोग करने में **काफी** तेज प्रवृत्ति होते जा रही हैं इन युवाओं का मानना है कि, फैशन एक ऐसी चीज है जिसमें हर किशोर व किशोरिया फिट होना चाहते हैं चाहे वो कितना भी गरीब वह अमीर ही क्यों ना हो फैशन के लिए रोज मर्रा वाली जिंदगी में कितने भी **संघर्ष** करने हो वो पूरे तरीके से अपने आप को तैयार कर रखें हैं।

अध्ययन के क्षेत्र : किशोर व किशोरियों **में** फैशन की इस दृष्टिकोण को जानने वह समझने के लिए प्रस्तुत शोध विषय किशोरावस्था में फैशन के अनुरूप घर पर बने वस्त्रो का आर्थिक स्थिति का वर्तमान समय में अध्ययन, कुशीनगर जिले के निवासियों के विशेष संदर्भ में **शोधार्थी** का शोध कार्य उद्देश्य प्रस्तुत करने का यह एक लघु प्रयास है।

अध्ययन का उद्देश्य: आज के समय में बहुत ही प्रसिद्ध एक शब्द है जिसको हम फैशन के नाम से जानते हैं जो इस आधुनिक समय के हर किसी के जुबान पर है ऐसा क्या है इस शब्द में, इसके लाभ **क्या**-क्या है? क्यों सभी लोग इस शब्द को पसंद कर रहे हैं? ऐसा क्या है, जो युवावर्ग शिक्षा को भूल इस फैशन शब्द का अनुसरण करना चाहते हैं, ऐसा

क्या है इस शब्द में जो शिक्षा से भी ज्यादा जरूरी हो गया है? इन्हें प्रश्नों के शोधार्थी को शोध जिज्ञासा की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है।

किशोरावस्था के किशोर व किशोरियो के अंदर फैशन पूरी तरह से बस गया है इसके साथ फैशन परिवर्तन का घोतक होने के साथ सामाजिक नियंत्रण का एक **महत्वपूर्ण** एवं एक प्रभावशाली साधन भी है यह एक उदार सामाजिक प्रत्यय है जो सर्वत्र चलन में रहता ही रहता है इस फैशन शब्द से किसी भी जाति विशेष, प्रजाति **विशेष** या धर्म विशेष से और नहीं किसी भी राष्ट्र से इसका कोई संबंध **नहीं** है ये हर किसी के लिए सभी लोग इसको **यानि** फैशन को अपना सकते हैं एक तरह के फैशन का विस्तार व चलन अलग-अलग राष्ट्रो, प्रांतों, जातियों, धर्मो प्रजातियों तथा समुदायों के युवा व युवतियों को पहनते देखा जा सकता है लेकिन छोटे-छोटे परिवर्तनों के साथ में।

1. फैशन सामाजिक लोक रीति का एक ऐसा पहलू है जिसकी विशेषता उसकी बदलती हुई प्रतियोगी प्रकृति से है।
2. फैशन हमारे पूर्वजों की एक सोच या कोशिश है और यह सोच बहुत पुरानी है।

हौलेन तथा सडैलर का मानना है कि, वस्त्र विज्ञान पर भी विज्ञान की खोज का प्रभाव पड़ा, आधुनिक समय में वस्त्रो के निर्माण के लिए नए रासायनिक रेशो का भी आविष्कार हुआ और अनेक प्रकार के नवीन रेशो की खोज निकाले जा रहे हैं।

किशोरावस्था में वस्त्रो से रोजगार-

1. रोजगार के मामले में कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा स्थान वस्त्र का है वस्त्र उद्योग **श्रम** प्रधान क्षेत्र कहा जाता है भारत में 45 मिलियन लोगों को रोजगार देता है वस्त उद्योग।
2. विश्व में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश भारत है। जिसकी विश्व में हाथ से बने हुए कपड़ों के मामले में 95% हिस्सेदारी भारत ही पूरा कर रहा है।

प्रोफेसर कॉललिगंर के अनुसार-

कोई भी समाज से जुड़ा व **कठिनाइयों** से जुडी खोज-अध्ययन को पूर्ण करने के लिए शोधार्थी को निम्न चरणों से गुजरना पड़ता है।

1. ज्ञान समस्या का चुनाव (**निरूपण**) करना।
2. अध्ययन के समय उद्देश्यों एवं खोज के प्रश्नों को बनाना।
3. अध्ययन समस्या की **तार्किक** तथा सावधानिक पूर्वक व्याख्यान
4. प्राथमिक तथा द्वितीय **आंकड़ों** का संकलन।
5. अध्ययन समस्या का **निरूपण**।

फैशन से सामाजिक जीवन के महत्व के संबंध में-

1. फैशन युवाओं के व्यक्तित्व को **प्रोत्साहित** करने में योगदान करते हैं।
2. फैशन सामाजिक व्यवस्था पर **निर्भर** रहती है।
3. फैशन युवाओं में बसे हिन भावना की क्षतिपूर्ति करता रहता है समय-समय पर।

परिक्षण और परिकल्पनाओं की सत्यता एवं सार्थकता की जांच; शोधार्थी के उद्देश्यों की पूर्ति एवं प्राप्ति के लिए परिकल्पनाओ की परीक्षण भी की गई जो निम्न है

1. फैशन अपने से वृद्ध तथा प्रौढ़ **दोनों** ही अवस्था के लोग उदास हैं यह सत्य एवं सार्थक पाई गई है।
2. फैशन के कारण हमारी संस्कृति पूरी तरह से प्रभावित हुई है यह परिकल्पना भी सत्य एवं सार्थक सिद्ध हुआ है।
3. फैशन अपनाने के संबंध में **किशोर** व किशोरियों तथा प्रौढ़ और वृद्ध के सोच में भिन्न-भिन्न बदलाव देखा गया है यह सत्य एवं सार्थक सिद्ध हुआ है।

उपरोक्त तथ्यों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है-

1. फैशन करने के संदर्भ में वृद्ध **जनों** की अपेक्षा विवाहित दंपतियों के दृष्टिकोण **में** उदारता पाई गए हैं।
2. फैशन एक ऐसी सामाजिक **मनोवैज्ञानिक** प्रक्रिया है जिसकी और प्रत्येक मानव आसानी पूर्वक उन्मुख तथा प्रवृत्त हो जाता है तथा उसे अपनाता है।
3. वृद्धजनों, विवाहितों तथा नई **पीढ़ी** के किशोर व किशोरियों के विचारों व सोच **में** भिन्नता पाई गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. भारत में फैशन का इतिहास hi.desiblitz.com.
2. वस्त्र विज्ञान एवं परिधान का **परिचय** डॉ मंजू पाटनी
3. wiki How
4. https://www.wikihow.com.
5. मानव पारिस्थितिकी और **परिवार** विज्ञान-,भाग 2
6. भारत में स्त्री अधिकारों के लिए सार्वजनिक तौर पर अभियान चलाने का श्रेय https://brainly.in>question